निशाने राह

(आजाद हिन्दुस्तान में मुसलमानों के मसायल व मुश्किलात का तजजिया और उनके रौशन मुस्तकबिल के लिए राहे अमल)

मौलाना अबुल हसन अली नदवी

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियात इस्लाम
पो० बाक्स न० 119, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकाशन :

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
पोस्ट बाक्स नं० 119, नदवा, लखनऊ
(भारत)

Series No. 220

प्रथम संस्करण
1989

मुद्रक :
नदवा प्रेस, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

मौलाना अबुल हसन अली नदवी की तहरीक पर अगस्त, 1948 ई० (शव्वाल 1367 हिज्री) में लखनऊ में हिन्दुस्तान के मुख़तलिफ़ मकातिबे ख्याल के दर्दमन्द मुस्लिम नुमायन्दे जमा हुए। इस इज्तेमा में आज़ाद हिन्दुस्तान में मुसलमानों के मसायल व मुशकिलात का तजज़िया और उनके रौशन मुस्तक़बिल के लिए राहे अमल की निशान देही करते हुए मौलाना ने अपने ख्यालात व तजावीज़ को एक मक़ाला की शक्ल में पेश किया। वाद में इसे मजलिसे तहक़ीकात व नशरियात इस्लाम, लखनऊ ने "निशाने राह" के नाम से शाया किया।

मक़ाला की अफ़ादियत के पेशे नज़र यहाँ उसे हिन्दी में पेश किया जा रहा है। अल्लाह तआला इसे मुसलमानों के हिन्दी दाँ तब्क़े के लिए मुफ़ीद और कारआमद बनाये।

क़िला बाज़ार, रायवरेली
23-12-1984 ई०
29-3-1305 हिज्री

मुहम्मद हसन अंसारी

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्

हज़रात ! इससे पहले कि हम मौजूदा हालात का जायज़ा लें, और कोई राहे अमल तय करें, हमको अपने पिछले कुछ दिनों का मुख्तसर जायज़ा लेना चाहिए ताकि हमको इस वक्त के मसायल व मुश्किलात का सही अन्दाज़ा हो, और हम उसकी रौशनी में सही रास्ता तय कर सकें।

हिन्दुस्तान की इस्लामी तारीख़ में तेरहवीं सदी हिज्री दो वाव के संगम का ज़माना है। हिन्दुस्तान में मुख़तलिफ़ रूहानी ताक़तें और सियासी अवामिल सदियों से जिस रूज्हान की परवरिश कर रहे थे वह तकमील को पहुँच चुका था और अव उनके वीच आपस में रस्साकशी और ज़ोर आज़माई थी। एक तरफ़ क़दीम इस्लामी जिन्दगी की विरासत और दीन के दाइयों और ख़ादिमों की मेहनत के नतीजे में उम्मत में कुल मिलाकर ईमान मौजूद था और तमाम इनक़लावात के वावजूद अक़ायद की वुनियादें महफ़ूज़ थीं। ईमान व सवाव और आख़िरत का यक़ीन अव भी ऐसी ताक़त थी जो उम्मत की दलदल में फँसी हुई गाड़ी के पहिये को हर वक्त घुमा सकती थी। पाप और वेदीनी पर इतराने का रिवाज शुरू नहीं हुआ था, अमली कोताहियाँ हद दर्जे वढ़ी हुई थीं। लेकिन आँखों में हया वाकी थी। क़ौमी ज़िल्लतों के वावजूद दीन की इज्ज़त व अज़मत दिल में वसी हुई और घुट्टी में इस तरह पड़ी हुई थी कि "अंग्रेज" अपने वढ़ते हुए असर और राज्य के वावजूद हिक़ारत की नज़र से देखे जाते थे और इसकी सियासी ताक़त उसकी हिक़ारत पर पर्दा डालने के लिए काफी न थी। क़ौमी खुद्दारी

www.abulhasanalinadwi.org

बड़ी से बड़ी ताक़त के सामने झुकने को तैयार न थी। आख़िरत की सुर्ख़रूई और जन्नत का शौक़ लोगो के लिए इतनी कशिश रखता था कि एक दीनी नारा बड़े-बड़े पापियों को अल्लाह के रास्ते में बेखुद बनाने के लिए काफी था। दींन में सुस्ती थी तवीयतें बुझी हुई थीं मगर राख के ढेर में आग दबी हुई थी जो दीन में रखना अन्दाज़ी के शुबह से भड़क उठती थी। यही बात थी कि सन् 1957 ई० में कारतूसों में सुअर की चर्बी की मिलावट की अफ़वाह ने सारे हिन्दुस्तान में आग लगा दी। और कौम के उन लोगों को सरफ़रोशी पर अमादा कर दिया जो अपनी ज़मीर फ़रोशी और दीनी बेहिसी के लिए मशहूर हैं। दीन व ईमान की मुहब्बत लोगों में इतनी मौजूद थी कि ईसाई धर्म के फैलाने वाले जिन्हें हुकूमत की पुश्तपना ही और उस की मदद हासिल थी, मुसलमानों के अदना और जाहिल तब्क़े में भी कामयाब न हो सके।

दूसरी तरफ़ बहुत दिनों से उस पेड़ को जो अभी ज़मीन पर खड़ा था घुन खा रहा था। मुसलमानों की क़ौमी सीरत के महफ़ूज़ क़िले के अन्दर बग़ावत के आसार शुरू हो गये थे, अठ्ठारहवीं सदी के आख़िर में जाफ़र, सादिक़ व ग़ुलाम अली जैसे लोग पैदा हो चुके थे जिन्होंने दुनिया को आख़िरत पर और अंग्रेज़ों की मदद को इस्लाम की हिमायत पर खुले आम तर्जीह (प्राथमिकता) दी और अपने ज़ातो नफ़ा के लिए बने बनाये खेल बिगाड़ दिये।

इस कशमकश में हज़रत सय्यद अहमद शहीद रह० और शाह इस्माईल शहीद रह० अपनी टीम के साथ मैदान में आये उन्होंने दीन के इस बचे-खुचे सरमाया का जायज़ा लिया जो

www.abulhasanalinadwi.org

उनके हिस्से में आया था। इस पूंजी की सबसे बड़ी दौलत दीनदारी का वह एहसास था जो अभी ज़िन्दा था लेकिन दिनोंदिन धूमिल पड़ता जा रहा था उन्होंने इस दबी हुई चिनगारी को हवा दी और उसे उभारा। और उनकी बिखरी हुई ताक़त को जोड़ा। उन्होंने इख़लाक़ व सलाहियत के कच्चे माल को जो पड़े-पड़े गलना शुरू हो गया था, सब तरफ से जमा किया। मर्दानगी, शराफ़त, हौसलामन्दी, जफ़ाकशी, ज्ञान, सूझ-बूझ, लिखना-पढ़ना, अदब व शायरी में से किसी चीज को हक़ीर (तुच्छ) और ग़ैरज़रूरी नहीं समझा। बल्कि इन सबको अल्लाह का माल समझ कर इनमें ईमान की रूह फूंक कर दीनी दावत और इस्लाह (सुधार) के काम में लगाया। उन्होंने ईमान और अल्लाह की रज़ा की चाह और शहादत के शौक़ की ताक़त से उम्मत की गाड़ी के पहिये को इस ज़ोर से घुमाया कि वह अचानक उस दल-दल से निकल आयी जिसमें वह कई सदी से फँसी हुई थी और फिर अपनी रूहानी ताक़त और मनोबल से उसको ढकेलते हुए मोर्चे पर पहुँचाया। सन् 1246 हिज्री की ज़ीक़ादा में यह गाड़ी बालाकोट की चट्टानों, लेकिन दर असल मुसलमानों की बेवफ़ाई और कमज़ोरी के पत्थरों से टकरा कर चूर-चूर हो गई। मगर इस के मुसाफ़िर हालात के साथ जूझते रहे और जगह-जगह अपने सेन्टर बना लिए। सादिक़पुर की ख़ानक़ाह और सथाना का सेन्टर इनमें ख़ास शोहरत रखते हैं।

सय्यद साहब की तहरीक के इस अन्जाम के बाद मैदान में कोई इज्तेमायी दीनी कोशिश बाक़ी नहीं रह गई। सन् 1857 ई० में बाक़ायदा अंग्रेज़ी हुकूमत क़ायम हो गई। यह हिन्दुस्तान की छः सौ साल की इस्लामी तारीख़ में अपनी तरह

www.abulhasanalinadwi.org

का पहला तजरबा था जिसके लिए मुसलमान ज़ेहनी तौर पर तैयार न था। मुसलमानों ने मन की खैंच-तान और हैरत के साथ इस घटना का सामना किया जिसमें नफ़रत और ग़ुस्सा ज्यादा था। जो लोग ज्यादा नाज़ुक और जल्दबाज़ थे उन्होंने इस इनक़लाब के सामने अपने हथियार डाल दिये और अंग्रेज़ी तालीम व अंग्रेज़ी तहज़ीब को मुसलमानों के दुख का इलाज समझकर मुसलमानों को पूरी ताक़त के साथ इसकी दावत दी। जो लोग उस वक्त दीन के मुहाफ़िज़ और अंग्रेज़ी हुकूमत के ख़िलाफ़ थे उन्होंने इस इनक़लाब को रोकने की कोशिश की और जब वह इसे रोकने में नाकाम रहे तो उन्होंने अपने अलग सेन्टर और दीन व तहज़ीब की हिफ़ाज़त के लिए जगह-जगह क़िले बना लिए जो "अरबी मदारिस" कहलाते हैं। इस तरह उन्होने दीन व तहज़ीब के एक बड़े हिस्से को और मुसलमानों के एक बड़े गिरोह को इलहाद व अधर्म से बचा लिया लेकिन मग़रिबी तहज़ीब व तालीम के असर से मुसलमानों के बड़े ढेर को न बचा सके।

अंग्रेज़ी हुकूमत में मुसलमानों के दीनी एहसास को बड़ी आजमाइश का सामना करना पड़ा। अंग्रेज़ी तालीम व तहज़ीब की चोट सबसे ज्यादा मुसलमानों के दीनी एहसास पर पड़ती थी। उनका सामना एक ग़ैर दीनी ताक़त से था। पहले लादीनियत, झूठ, दग़ाबाज़ी और उरयानी ज़िन्दगी की "बिदआत" में गिने जाते थे जिनको समाज ने अभी तक सही नहीं ठहराया था अब उनकी हैसियत "दीनुलमलूक" की थी और यह आमलोगों में मक़बूल हो चुकी थी, पहले दुनियादारी एक आदमी का अमल था अब इसके इदारे और मुस्तक़िल तहरीकें थीं।

www.abulhasanalinadwi.org

इसी तरह रोज़ी कमाने में अक़ीदा और ज़मीर का दुराव और बहुत सी दीन के ख़िलाफ़ चीज़ों का चलन, दुनियावी तरक्की के लिए दीन की तरफ़ से ग़फ़लत, दीन का पतन और दीनी फ़रायज़ को छोड़ने का बहाना एक क़ौमी फ़तवे की हैसियत अख़्तियार करता जा रहा था। इस सबका नतीजा था कि जाने और अनजाने तौर पर मुसलमानों का दीनी एहसास दिनोंदिन कम होता जा रहा था और उसमें लचक और लोच पैदा होता जा रहा था।

दूसरी तरफ़ यह भी सही है कि मुसलमानो की आप अपनी हिफ़ाज़त करने की ताक़त अभी ज़िन्दा थी और इस बात ने आसानी के साथ बेदीनी को हज़्म नही होने दिया। अभी ऐसे लोग मौजूद थे जिन्होंने अंग्रेज़ का मुँह न देखने की क़सम खायी थी, जो मजबूरी से हाथ मिलाने के बाद अपना हाथ पाक करते थे, जो किसी अंग्रेज़ी दरबार या किसी जुलूस के मौके पर ग़ैरत व ग़ुस्से में शहर छोड़कर चले जाया करते थे। और जो अंग्रेज़ी शान व शौक़त को देखने को बेग़ैरती समझते थे।

साथ ही योरोप व हिन्दुस्तान के हालात में बड़ा फ़र्क़ था इसलिए योरापीय तहज़ीब व तालीम को यहाँ बड़ी कशमकश का सामना करना पड़ा। इसके अलावा अंग्रेज़ी हुकूमत के सामने कोई इख़लाक़ी दावत न थी और न कोई ज़िन्दगी का निज़ाम था। इसके जो कुछ तहज़ीबी असरात इस मुल्क में फैले वह ज़्यादा तर उसकी हुकूमत के सबब फैले। इसकी एक वजह यह भी थी कि कुछ मुसलमान ऐसे थे जो मुसलमानों की पस्ती का इलाज यही समझते थे कि वह अंग्रेज़ों की तहज़ीब को अख्तेयार करके कुछ बुलन्दी हासिल कर लें। अंग्रेज़ी दौर दरअसल एक

www.abulhasanalinadwi.org

दफ्तरी नेज़ामे हुकूमत का दौर था और उसकी दिलचस्पी सिर्फ़ दफ्तरी नेज़ाम को दुरुस्त रखने में थी।

नया दौर और उसके ख़तरनाक पहलू :

पन्द्रह अगस्त 1947 ई० से एक दूसरा दौर शुरू हुआ। और मुसलमानों के दीन, तहज़ीव व तालीम को नये मसायल का सामना करना पड़ा। मुल्क में अपनी हुकूमत के क़ायम के साथ गैर मज़हबी हुकूमत का एलान किया गया, मगर जो अवाम में ज्यादा असर रखते हैं वह सन् 1947 ई० के इनकलाव को सिर्फ एक सियासी इनक़लाव नहीं समझते बल्कि एक नयी ज़िन्दगी और हिन्दू तहज़ीव की निशात सानिया से इसको तावीर करते हैं और साफ़ कहते हैं कि बंटवारे के वाद अव इस मुल्क में सिर्फ़ एक ही तहज़ीव और एक हो ज़बान रहेगी उसमें किसी दूसरी तहज़ीव और मिली-जुलो ज़बान की गुंजाइश नहीं वह एत्तेहाद के बजाय वहदत की दावत देते हैं जिसमें तहज़ीवी ख़सायस की कोई तफ़रीक़ न हो।

एक तारीख़ी हक़ीकत :—यहां यह तारीख़ी हकीक़त पेश नज़र रखना चाहिए कि इस मुल्क की ज़मीन और इसकी तहज़ीव ने मुसलमानों से पहले वीसियों क़ौमों को उनके क़ौमी ख़सायस और दीनी पहचान मिटाकर इस तरह हज़म कर लिया कि अव उनका कोई अलग वजूद वाकी नहीं रहा। पढ़े-लिखे लोग जानते हैं कि "वहदते वजूद" और "वहदते अदियान" का ख्याल जो हिन्दू मज़हव और फलस्फ़ा की रूह है एक ऐसे दीन के लिए वहुत वड़ा ख़तरा है जिसकी वुनियाद रिसालत व शरीअत पर हो और जो इस का क़ायल न हो कि "सव मज़हव

www.abulhasanalinadwi.org

एक हैं'' बल्कि इसका क़ायल हो कि ''हक़ एक है''। ऐसा मज़हब और फ़लस्फ़ा जो तमाम मज़ाहिब के बरहक़ होने का दावा करता हो किसी दूसरे मज़हब के जाहिल अवाम को अपने में ज़म कर लेने की बड़ी सलाहियत रखता है, फिर जिस तहज़ीब, तालीम व निज़ामेज़िन्दगी से वास्ता है वह इसी मुल्क की पैदावार है इसलिए क़ुदरतन इसके रास्ते में वह क़ुदरती रुकावटें नहीं हैं जिनका सामना मग़रिबी तहज़ीब को था।

इसके साथ कुछ और बातें हैं जिन्होंने ख़तरे को और ज्यादा सख्त कर दिया है। इन बातों का तअल्लुक़ खुद मुसलमानों की मौजूदा हालत से है।

जो दीनी व तहज़ीबी विरासत 1857 ई० के इनक़लाब ने दिया था वह 1957 ई० तक बराबर ख़र्च होता रहा और उसके बाद वह मौजूदा नस्ल को ट्रांस्फर हुआ इसलिए क़ुदरतन उसकी तेज़ी कम हो गई। मुसलमानों का दीनी एहसास चोट खाते खाते जख्मी हो चुका है। और अपने बचाव की ताक़त बहुत कुछ कमज़ोर पड़ चुकी है। अंग्रेजी दौरे हुकूमत ने दौलत की पूजा, कुर्सी की लालच और क़ौमी बेवफाई के ऐसे पायदार असरात छोड़े हैं जो हर मैदान में दीनी व इख़लाक़ी एहसास को कमज़ोर करते हैं।

यह बात भी लेहाज़ के क़ाबिल है कि अंग्रेज़ों की सियासत और मुस्लिम सियासी लीडरों के ख़ास मिजाज ने मुसलमानों को इस मुल्क में महज़ एक सियासी हरीफ़ बनाकर छोड़ दिया जिसके साथ न कोई बेग़र्ज़ दीनी दावत है, न इन्सानियत के लिए नजात का कोई पैग़ाम और न सियासी हुक़ूक़ व फ़वायद से ऊँचे उठकर जिन्दगी का कोई मक़सद।

www.abulhasanalinadwi.org

इसके अलावा उन्होंने अपनी सियासी दावत को कामयाब बनाने के लिए जज़बात को इतना भड़काया कि मुसलमानों की तरफ़ से दिमागों में कोई ऊँचा ख्याल और दिलों में हमदर्दी का कोई जज़बा बाक़ी न रहा। नतीजा यह हुआ कि इस्लाम को रुहानी व इख़लाक़ी दावत सिर्फ़ एक हरीफ़ की हैसियत से देखी जाने लगी और दिल के दरवाज़े बड़ी हद तक इस्लामी दावत के लिए बन्द हो गये।

दूसरी तरफ़ मुसलमानों के जोश व जज़बात के बेजा इस्तेमाल से उनको यह नुक़सान पहुँचा कि वह थोड़े दिनों में अपना जख़ीरा ख़त्म करके नाउम्मीद हो गये हर तरफ नाउम्मीदी व बेदिली के आसार नज़र आने लगे। फिर फसाद और हँगामों ने और आख़िर में सियासी लीडरों के मैदान छोड़ देने से उनके दिल बुझ गये। उनमें बहुत से ऐसे लोग थे जो किसी ख़ास फिर्क़े से अपना तअल्लुक़ बताने से इस तरह घबराने लगे जिस तरह साँप का डसा हुआ रस्सी से भी भागता है। इसके अलावा उनमें एहसास कमतरी जो नेशन्स के लिए तपेदिक़ की ख़ासियत रखता है और जो 1857 ई० के कुछ बाद पैदा हुआ था, 1947 ई० के बाद ज़ोर पकड़ गया। मुसलमानों के ईमान व यक़ीन की ताक़त कमज़ोर पड़ चुकी। उनमें ख़ौफ़ व हिरास की लहर दौड़ गई।

हज़रात! हमने बीते दिनों का और मौजूदा हालात का जो नक्शा पेश किया है उसे देखकर हो सकता है कि नाउम्मीदी की एक लहर हमारे दिलों में दौड़ जाये और हमको आने वाला कल भी अन्धेरा दिखाई दे। लोगों की ज़बान पर कुछ दिनों से उन्दलस, बुख़ारा और समरक़न्द के नाम भी आने लगे हैं;

www.abulhasanalinadwi.org

लेकिन हालात का एक रौशन पहलू यह है कि हमारा आने वाला कल अपने दामन में कुछ रौशनियाँ लिए है। ऐसा मालूम होता है कि इस मुल्क में इस्लाम के मिटने के बजाय उसकी ज़िन्दगी का एक नया दौर शुरु होने वाला है। अल्लाह का फ़रमान है।

तर्जुमा: "और शायद तुमको बुरी लगे एक चीज़ और वह बेहतर हो तुमको (सूरः बक़रः 216)

अभी तक उम्मत की दावत वाली हैसियत पर ऐसे तहदार पर्दे पड़े थे कि उनका उठना मुशकिल नज़र आता था। इस हैसियत को उसकी नज़र से ओझल करने वाली और उसको अपने रास्ते से हटाने वाली इतनी चीज़ें थी कि सदियों यह पर्दा चाक न होता–सियासी इक़्तेदार, ओहदों की कशिश ऐसे ताकतवर और दिलफ़रेब मक़ासिद थे जिन के सामने कोई तवलीग़ व दावत कारगर नहीं होती थी। लेकिन अल्लाह तआला की हिकमत के एक इशारे ने अचानक यह पर्दा चाक कर दिया और हालात ने मुसलमानों को अचानक एक ऐसे मक़ाम पर ला खड़ा कर दिया जहाँ दीन के सिवा कोई रोशनी, ईमान के सिवा जीने का कोई सहारा और इस्लामी दावत के सिवा पनाह की कोई जगह नज़र नहीं आती। यह वह नादिर मौक़ा है कि मुसलमान अपनी जिन्दगी पर दोबारा नज़र डालें और अपनी कमज़ोर हैसियत को ख़त्म करके सही और ताक़तवर हैसियत अख्तेयार करें और यूं समझें कि आज से हिन्दुस्तान में उनकी असली ज़िन्दगी शुरू होती है। इनकी हैसियत अब इस मुल्क में एक सियासी हरीफ़ या मआशी रक़ीब की नहीं है जिस को अपनी तादाद और हैसियत के लेहाज़ से ख़िदमत व मातहती

www.abulhasanalinadwi.org

के कुछ मौके मिलने चाहिए बल्कि उनकी हैसियत एक बेलौस दावत देने वाले की है जो अपने फ़ायदे के लिए नहीं बल्कि आदम की औलाद की भलाई के लिए आया है। जो तमाम क़ौमी व मुल्की भेदभाव से ऊपर उठकर इन्सानों को ज़िन्दगी के अन्धेरों से निकाल कर नबूवत के उजाले में, और इन्सानों को इन्सानों की बन्दगी से निकाल कर अल्लाह की बन्दगी में, मज़हब और ख़ुद की बनाई हुई नाइन्साफ़ियों से निकाल कर दीन व हक़ के अदल व इन्साफ में दाख़िल करने के लिए आया है। वह दौलत, ख़ुदग़र्ज़ी और नफ़्स परवरी की काँटों भरी राह बल्कि अंगारों भरी चिता से उठाकर सही रुहानियत व इख़लाक़ बेग़र्ज़ी और ख़ुदापरस्ती की उस जन्नत में दाख़िल करने के लिए आया है जिसमें कोई ग़म और कोई खटका नहीं। उसका पैग़ाम है :–

तर्जुमा: "आओ एक सीधी बात पर हमारे तुम्हारे दरमियान की, कि बन्दगी न करें मगर अल्लाह की, और शरीक न ठहरायें उस की कोई चीज़, और न पकड़ें आपस में एक एक को रब सिवा अल्लाह के"। (सूरः आले इमरान–64)

यह दावत अल्लाह तआला की वह महबूब दावत है जिस की ख़ातिर उसने अपने कानूने क़ुदरत में तबदीली कर दी, चीज़ों से उनकी ख़ासियत छीन ली और कभी उनकी फितरत के ख़िलाफ़ ख़ासियत उनमें पैदा कर दी। आग को गुलज़ार और समन्दर को पायाब कर दिया। पहाड़ उसके रास्ते में आये हैं तो उनको झुकना पड़ा है। उसके रास्ते में समन्दर और दरिया पड़ गये हैं तो उनको रास्ता देना पड़ा है। क़ीरवान की तारीख़ शाहिद है कि अज़दहों और ख़ूँख़ार दरिन्दों से उसके काम

www.abulhasanalinadwi.org

में रुकावट आई है तो उनको जँगल छोड़कर चला जाना पड़ा है। यह दावत क़ौमों के लिए 'अमृत' है जिसने इसे पी लिया उस पर मौत हराम है। अगर मुसलमान इस दावत के अलम-वरदार हैं तो वह मिट नहीं सकते। यह उनकी ज़िन्दगी की ज़मानत है।

इस्लामी दावत के लिए आज भी ज़मीन हमवार है :

इस पैग़ाम की सदाक़त हर तरह की मुश्किल, मुख़ालिफ़त, शिकायत और ग़लतफ़हमी पर ग़ालिब है। इसके रास्ते में न पहाड़ हायल है न दरिया, न क़ौमियत की दीवारें, न तबकात का फ़र्क़, न रँग व नसब का इख्तेलाफ़। इससे हर ज़माने में मोजज़ात का ज़हूर होता रहा है और काबा को सनम ख़ाने से पासबाँ मिलते रहे हैं। इस वक्त इसके रास्ते में मुसलमानों की ग़लती से तअस्सुब की बड़ी बड़ी दीवारें खड़ी हो गई हैं वहाँ क़ुदरत ने इसका रास्ता साफ़ करने में भी कमी नहीं की है। इन्सानी निज़ाम की नाकामी, जिन्दगी की गिरह को सुलझाने की हर नई कोशिश के बाद उसकी सैकड़ों नयी उलझने, आज़ादी के बाद देशवासियों को असली राहत से महरुमी, इख़लाक़ व इन्सानियत का ज़वाल, एहसास ज़िम्मेदारी की कमी, तिजारतपेशा और मुलाज़िम पेशा लोगों की बढ़ी हुई दौलत की लालसा ने देश को रिशवत, चोर बाज़ारी और नफ़ाख़ोरी की मुसीबतों में झोंक दिया है और इसके रोकथाम की कोई सूरत नज़र नहीं आती। इन सब हक़ीक़तों ने साबित कर दिया है कि इस ज़िन्दगी की चूल अपनी जगह से हटी हुई है, इसमें कोई ऐसी चीज़ कम है जिसकी कमी दूसरी चीजें पूरा नहीं कर पा रहीं हैं। यह चीज़

www.abulhasanalinadwi.org

है अल्लाह पर ईमान और हर वक्त उसका ख़ौफ़, आख़िरत का यक़ीन और जवावदेही का खटका और अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी पैरवी।

इस्लाम के पैग़ाम के दो सरचश्मे हैं—क़ुरआन मजीद और अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत। इन दोनों में वह मोहनी है जो दुश्मन को दोस्त और पत्थर को मोम कर दे। यह अन्दर अन्दर अपना रास्ता इस तरह पैदा करते हैं कि किसी को ख़वर नहीं होती। यह ताक़त आज भी अपना जादू दिखा सकती है। सिर्फ़ दो चीज़ों की ज़रुरत है—एक तो यह कि इनको इस तरह पेश किया जाये कि हर इन्सान इनको अपनी चीज़ और अपने दर्द की दवा समझे, दूसरे यह कि इनको मुसलमानों की ग़लतियों व ख़ाहिशों से अलग करके पेश किया जाये। और अपनी कोताही तसलीम करने में ज़रा भी हिचकिचाहट न हो। अगर मुहब्बत और हिकमत के साथ यह दो चीज़े पेश हों तो आज भी यह पहाड़ों को अपनी जगह से हटाने और दरियाओं का रुख़ बदलने की ताक़त रखतीं हैं।

इस ताक़त से काम लेने का एक तरीक़ा तो यह है कि इन दो चीज़ों को दिलों में उतारने के लिए वह सब माक़ूल व मुफीद तरीके अख्तेयार किये जायें जो मुमकिन हों। मिले जुले मजमों में हिकमत के साथ ज़िन्दगी की बे नज्मी से ईमान और पैग़म्बरों की रहनुमाई की ज़रुरत का एहसास दिलाया जाये। क़ुरआन मजीद चुनीदा हिस्से और अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिन्दगी के पुरअसर वाक्यात पेश किये जायें। अगर मुक़र्रिर हालात व नफ़सियात से वाक़िफ़

www.abulhasanalinadwi.org

है और आसान ज़बान और क़ुरआन व सीरत की तफ़हीम व तलख़ीस पर क़ादिर है तो यह कोशिश बहुत कामयाब हो सकती है।

दूसरी ज़रुरत यह है कि इस्लाम के पैग़ाम पर हिन्दी और अँग्रेजी में आसान मगर ताक़तवर लिट्रेचर छोटी छोटी किताबों की शक्ल में मुहय्या किया जाये। किताबों की तबाअत पुरकशिश हो, कीमतें जहाँ तक हो सके कम हों, इसकी इशाअत इतने बड़े पैमाने पर हो कि कोई रीडिंग रुम, रेलवे, बुक स्टाल और बुक सेलर की दुकान इससे खाली न हो। इस के अलावा निजीतौर पर भी गैर मुस्लिम दोस्तों, अफसरों और मातहतों और पड़ोसियों को पेश की जाये और उन्हें पढ़ने को कहा जाये।

तीसरी ज़रुरत इसकी है कि हिन्दी और अंग्रेज़ी में कुछ अच्छे लिखने वाले हों जो हिन्दी और अंग्रेज़ी के रिसालों में कभी-कभी लिखते रहें। खालिस गैर मुस्लिमों के हल्के में किसी हिन्दी या अंग्रेज़ी दावती रिसाला जारी करने के मुक़ाबले में यह तरीक़ा ज्यादा अच्छा है मगर फिर भी कुछ हिन्दी और अंग्रेज़ी के रिसाले निकालने की ज़रुरत है। इस काम के लिये पूँजी और वक्त की ज़रुरत होगी। यह बात सभी मानेंगे कि मुसलमान के माल, वक्त और ताक़त का इससे बेहतर और इस से ज्यादा ज़रुरी कोई मसरफ नही। और अगर मुसलमान जो खाते पीते लोग हैं, इस काम में कँजूसी से काम लें तो उनके लिए क़ुरआन का यही इरशाद दोहराया जा सकता है :-

तर्जुमा: "तो राह देखो, जब तक भेजे अल्लाह हुक्म अपना और अल्लाह राह नहीं देता नाफ़रमान लोगों को।" (सूरः तौबा-24)

www.abulhasanalinadwi.org

यहाँ जिस वक्त से डराया गया है वह वक्त तो बहुत जगह हमारे मुल्क में आ चुका है जहाँ सारे उम्र की कमाई दौलत लमहों में लुटी और फुँकी और वही दौलत जिससे अल्लाह का नाम ऊँचा करने में कँजूसी की गयी थी, गले की फांसी बन गई।

तर्जुमा: "फिर दाग़ेंगे उससे उनके माथे और करवटें और पीठें, यह है जो तुम गाड़ते थे अपने वास्ते, अब चखो मज़ा अपने गाड़ने का"।

(सूरः तौबा–35)

क़ुरआन मजीद का एलान है :–

तर्जुमा "और खर्च करो अल्लाह की राह में और न डालो अपनी जान को हिलाकत में, और नेकी करो, अल्लाह चाहता है नेकी वालों को।"

(सूरः बक़्रः–195)

हज़रात! मौजूदा ग़ैरमामूली हालात जिनको "इत्तेफ़ाक़ात" के बेमानी लफ्ज से याद करके उनकी अहमियत को घटाया नहीं जा सकता, साफ बतला रहे हैं कि अल्लाह तआला मुसलमानों के इस मौजूदा जाहिली तर्ज़ ज़िन्दगी से जिस में दावत की रुह, दीन के लिए कोशिश व ईसार, आख़िरत की फ़िक्र और ईमानी ज़िन्दगी की कैफ़ियत न हों हरगिज राजी नहीं। यह भी उस की ख़ास रहमत है कि वह उनको इस तरह ज़िन्दगी गुजारते ज्यादा दिन तक नहीं देखना चाहता। आप किसी एक हफ्ता या एक दिन के हालात व अख़बार देख कर अन्दाजा लगा सकते हैं कि गोंया मुसलमान हर जगह झिझोड़े और जगाये जा रहे हैं। और तरह तरह के ख़तरे के अलामात उनको चौकन्ना कर

www.abulhasanalinadwi.org

रहे हैं। साफ़ मालूम होता है कि उम्मत के लिए एक जिन्दगी से दूसरी जिन्दगी में क़दम रखने का वक्त आ गया है और दुनिया भर में इनमें तबदीली का सामान हो रहा है। और इन को अपना मंसब और मक़ाम याद दिलाया जा रहा है।

लेकिन इसके बरख़िलाफ़ आम मुसलमानों की आम आबादी का तर्जे जिन्दगी दुनियादारी और ख़ुदफ़रामोशी सख्त तशवीश पैदा करती है। जिन्दगी गुजारने का यह तरीक़ा जिसमें खाने कमाने, अपना और अपने बाल बच्चों का पेट भरने के अलावा कोई बुलन्द मक़सद न हो, जिन्दगी पुरी तरह ईमान और आख़िरत की जवाबदेही से ख़ाली हो; जिसमें अल्लाह के कलाम को ऊँचा करने का जज्बा न हो, जिसमें दीन की तरक्की और उसकी जानकारी की तमन्ना न हो न ही उसकी फ़िक्र हो, जिसमें दीन की उल्फ़त और इस्लामी भाई चारे का जज्बा न हो, दीनी दावत और उसके लिए चलत फिरत न हो, दीन के लिए ख़ुशामद व उसके लिए ईसार व जफ़ाकशी से ज़िन्दगी ख़ाली हो, यह वह तर्जे जिन्दगी है जो अच्छे ख़ासे आजाद इस्लामी मुल्क को उन्दलस बना सकता है।

जाहिर है कि इन मक़ासिद का बना बनाया माहौल अब इस्लामी मुल्कों में भी मौजूद नहीं और दावत व हरक़त की यह जिन्दगी ख़ालिस इस्लामी आबादियों में भी नहीं पायी जाती। इसके लिए हर जगह कोशिश करनी होगी। इसके लिए एक ऐसा मौक़ा और माहौल फ़राहम करना होगा जिसमें आम मुसलमानों को शिर्कत की दावत दी जाये जिसमें शरीक हो कर मुसलमान अपनी ज़िन्दगी के असल मक़सद को मालूम कर सकें, जहाँ आकर पिछलीं बेमजा जिन्दगी और ग़फलत की गर्द झाड़

www.abulhasanalinadwi.org

सकें जहाँ से वह आने वाले दिनों के लिए नई ताक़त, नयी ताज़गी और ईमान की नयी ताक़त हासिल कर सकें। और जिसकी वजह से मुसलमान क़ुरआन की इस आयत की तर्जुमानी कर सकें।

तर्जुमा: "वह मर्द कि नहीं ग़ाफ़िल होते सौदा करने में न बेचने में अल्लाह की याद से, और नमाज़ खड़ी रखने से, और ज़कात देने से, डर रखते हैं उसी दिन का, जिसमें उल्टे जायेंगे दिल और आँखे।"

(सूरः नूर–37)

और अपने साथ दीन की ऐसी तड़प ले जा सकें जो उन को ग़ाफ़िल न होने दे जहाँ वह ईसार व ज़फ़ाकशी की आदत डाल सके और उनमें अपनी सलाहियतों और अल्लाहतआला की बख्शी हुई ताक़त का एहसास हो सके जो उनकी निगाह में आख़िरत की जिन्दगी की क़ीमत को बढ़ाती और दुनियावी ज़िन्दगी की क़ीमत को घटाती रहे।

आज मुसलमानों में जो ग़फलत और बेहिसीतारी है उस में तबदीली लाने का आख़िर क्या ज़रिया है? और उनकी दीनी तरबियत का क्या रास्ता है? किताबों की इशाअत, दीनी मदारिस के क़याम, वाज़ व तक़रीर से वह नतीजा हासिल नहीं होता जो एक जिन्दा रूहानी माहौल की ख़ुसूसियत है। उनमें न इतना फैलाव होता है और न इतनी गहराई जो एक दीनी जिन्दगी से हासिल होती है। दीनी माहौल के लिए हर शहर और कस्बे में पढ़े लिखे लोग दीनी मरकज और इज्तेमा क़ायम कर सकते हैं। इस तरह अवाम व ख़वास ख़ालिस दीनी जज्बा से एक दूसरे की मदद के लिए एक जगह जमा हो जाया करेंगे

www.abulhasanalinadwi.org

और पूरा माहौल बदलेगा। आज बे दीनी का जो ख़तरा पैदा हो गया है उसके पेशे नजर यह काम बहुत जरुरी है। इसके लिए जिस बड़े अमले की जरुरत है, कोई इस्लामी हुकूमत भी इसका इन्तेजाम नहीं कर सकती। करोड़ों की आबादी में चन्द हजार लोग क्या तबदीली पैदा कर सकते हैं। इसकी सूरत यही समझ में आती है कि इज्तेमाआत और आम दावत को इस जरुरत की तकमील का जरिया बनाया जाये। मुसलमानों के हर तब्के से इस मक़सद के लिए वक्त हासिल किया जाये। मरकज की तरफ से महीने के कुछ दिन मुक़र्रर हों जिस में लोग इसके लिए वक्त निकालें। उनकी जमाअतें शरयी निजाम के मातहत शहरों, क़स्बात और देहातों की तरफ़ भेजी जायें। शहरों में वह शहरियों के मेजाज व हालात के मुताबिक़ दीन की दावत दें और वहाँ के मुसलमानों को इज्तेमा करने, दीनदार लोगों को उसकी सरपरस्ती करने और फिर माहवार जमाअतें निकालने पर आमादा करें। और देहातों में वहाँ की दीनी सतह और तक़ाजे के मुताबिक दीन की तलक़ीन करें और उनमें दीनी एहसास पैदा करें और उनको क़रीब के इज्तेमाआत में शरीक होने की ताकीद करें। तजर्बे से यह बात साबित हो चुकी है कि अगर इस निजाम को आमतौर पर रिवाज़ दिया जाये और शहरों व कस्बों में ऐसे मरकज क़ायम हो जायें और वह किसी ऐसे बड़े मरकज से जुड़े हों जहाँ तरबियत याफ्ता और तजर्बेकार व उसूल से वाक़िफ लोग मौजूद हों तो अल्लाह पर भरोसा करते हुए हम यह कह सकते हैं कि हिन्दुस्तान में न सिर्फ यह कि इस्लाम का दीनी मुस्तकविल महफ़ूज है बल्कि दीनी हैसियत से यहाँ का हाल, माजी से और मुस्तक़विल हाल

www.abulhasanalinadwi.org

से असल इस्लामी जिन्दगी से ज्यादा क़रीब होगा।

आज़ाद इस्लामी दरसगाहों की ज़रुरत : हजरात ! इन सबके बावजूद एक ऐसी उम्मत के लिए जिसके पास शरीअत भी है और किताब भी, ख़ालिस इस्लामी सलतनत में भी दीनी तालीम जरुरी है। उम्मत का रिश्ता इस्लाम की तालीमात से कायम रखने के लिए ऐसी आज़ाद इस्लामी दरसगाहों की जरुरत है जिनसे मुसलमान अपने दीनी सरचश्मों से सैराब होते रहें। इस्लामी मकातिब और दींनी मदारिस के न होने से बड़े पैमाने पर दीन व तहजीब से फिर जाने का खतरा है और अब ख़ालिस मुशरिकाना नेसावे तालीम की वजह से यह ख़तरा हक़ीक़त बन कर सामने आ गया है। अंग्रेजी सल्तनत के कयाम के साथ दफ्तरी कामों में घूसने की लालच और सरकारो ओहदों की कशिश ने ख़ालिस दीनी और आजाद दरसगाहों को हिलाकर रख दिया था और मुसलमानों के एक बड़े तब्का की निगाह में इन मदरसों का वजूद जो सरकारी नौकरी दिलाने में क़ासिर थे, बेसूद और बेमानी बन कर रह गया था। अब नये हालात और इनक़लाब ने हालत बदल दी है। सरकारी नेजामे तालीम और दुनियावी तरक्की और रोजगार लाजिम व मलज़ूम नहीं रहे। अब मुसलमानों को इस मसले पर दोबारा ग़ौर करना है। इसी के साथ नये सियासी इनक़लाब ने आने वाली नस्ल के लिए इस्लाम के रास्ते में नये ख़तरात पैदा कर दिये हैं। दुनिया की कोई क़ौम किसी रियासत की सरपस्ती और इमदाद के सहारे अपने तालीमी जरुरतों और मजहबी जिन्दगी की बक़ा का इन्तेजाम नहीं कर सकती। इसके लिए उसके इरादा और फैसला व कोशिश की जरुरत है। और अगर उस

www.abulhasanalinadwi.org

की राय ठोस, उसका फैसला अटल और उसका एहसास मजबूत है तो कोई ताकत उसके रास्ते में हायल नहीं हो सकती। तारीख़ में इसकी कई नजीरें मिलती हैं कि क़ौमों ने नामुवाफ़िक़ हालात में विना सरकारी इमदाद के भी अपनी आजाद तालीम का वन्दोवस्त किया है।

लेकिन इसके लिए दो चीजों की जरुरत है—एक दुनियावी दौलत की क़ुरवानी और दीनी तालीम से सच्ची वफ़ादारी, दूसरे ज़माने के हक़ीकी तक़ाज़ों का एतराफ़ और उसके जायज मताल्वात की तकमील यानी नेजामे तालीम के सिलेसिले में जरुरी कोशिश और उसकी इस्लाह व तरक्की की कोशिश। इस वक्त पूरे मुल्क में ऐसी आजाद दरसगाहों और दीनी मकातिव के क़याम की जरुरत है जो अल्लाह के भरोसे सिर्फ मुसलमानों के दीनी एहसास व तलब की बुनियाद पर अपना फ़रीजा अँजाम दें और जमाने की रुकावटों को अपनी राह में हायल होने की परवाह न करें मुलमानों के लिए अब ओहदों और मुलाजिमतों की वह फरीख़ी वाक़ी नहीं रही जो पहले थी। सरकारी तालीम रोजी रोटी कमाने के लिए पहले भी एक जुआ थी जिस में हार जीत का एकसाँ ख़तरा था, अब तो हार का इमकान बहुत बढ़ गया है। इसलिए अगर हिम्मत व इरादे से सूझ बूझ के साथ काम लिया जाये तो दीनी तालीम का औसत पहले से बहुत बढ़ सकता है, लेकिन इसके लिए बहरहाल एक ऐसी जमाअत की जरुरत है जो इसको अपनी जिन्दगी का मक़सद क़रार दे और उसमें अपनी जान की बाजी लगा देने से न हिचकिचाये।

हजरात! उन ग़ैवी इमदादों के साथ जो इस्लाम की

www.abulhasanalinadwi.org

दावत के लिए रास्ता साफ़ कर रहे हैं आने वाले वक्त से हिरास या अल्लाह की रहमत से मायूसी की कोई गुंजाइश नहीं मालूम होती। फिर जो मजमा इस वक्त हमारे सामने है उसे देखकर यह यक़ीन नहीं आता कि जिस मुल्क में इतने समझदार और दर्दमन्द मुसलमान हों उससे इस्लाम मिट सकता है। जब कभी एक अल्लाह के महबूब बन्दे ने मोमिन के यक़ीन के साथ कह दिया कि :-

तर्जुमा: "क्या मेरी ज़िन्दगी में दीन में काट-छाँट हो सकती है?"

तो फ़ौरन जमाने के तेवर बदल गये और दीन से फिरने की तरफ़ बढ़ता हुआ धारा रूम व शाम की फ़तेह और आलमगीर इशाअते इस्लाम की तरफ पलट पड़ा है। अगर सच्चे दिल से काम करने वालों की एक जमाअत आज भी सिद्दीक़ियत की अदना झलक के साथ कह उठती है कि "क्या हमारे जीते जी हिन्दुस्तान से दीन मिट सकता है तो यक़ीन मानिये कि हरगिज नहीं मिट सकता है बल्कि उसकी कामयाबी और इशाअत के लिए वह नई नई राहें खुलेंगी जो किसी के गुमान में नहीं। क़ुरआन मजीद का इरशाद है :-

तर्जुमा: "सो तुम बोदे न हुए जाओ और पुकारने लगो सुलह और तुम ही रहोगे ऊपर और अल्लाह तुम्हारे साथ है, और नुक़सान न देगा तुमको तुम्हारे कामों में" (सूरः मोहम्मद-38)

www.abulhasanalinadwi.org